KGS IAS

आधुनिक भारत का इतिहास

KGS IAS

KHAN GLOBAL STUDIES

Most Trusted Learning Platform

OFFLINE COURSE

UPSC-GS (Prelims + Mains)

Foundation Programme 2024-25

English Medium

Karol Bagh Centre
Add: 57/14, Old Rajendra Nagar, New Delhi - 110060
Ph. No : +91 9205 777 818

Hindi Medium

Mukherjee Nagar Centre
Add: 704, Ground Floor, Main Road, Front Of Batra Cinema, Mukherjee Nagar, Delhi - 110009
Ph. No : +91 9205 777 817

ONLINE COURSE

UPSC (Pre + Mains)

English Medium
Batch Starts 26th September

Hinglish Medium

UPSC-CSAT

English Hindi
Batch Starts
10th October
Admission Open

By Khan Sir & Tean

Download Our Official App
GET IT ON Google Play
Download on the App Store

www.khanglobalstudies.com
+91 9319 293 730

विषय-सूची

Module - I

1. यूरोपीय कंपनियों का आगमन तथा भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना तथा विस्तार

- पृष्ठभूमि/भूमिका
- पुर्तगाली
  - पतन के कारण
- डच
  - व्यापार की स्थापना
  - पतन
- अंग्रेज
  - ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रगति
- डेनिस
- फ्रांस
  - भारत में केंद्रो की स्थापना
  - असफलता के कारण
- कर्नाटक में एंग्लो-फ्रेंच प्रतिस्पर्धा
- पृष्ठभूमि
- व्यापारिक अधिकार के लिए अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध
  - प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48)
  - द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754)
  - तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63)

2. भारतीय राज्यों पर ब्रिटिश विजय

बंगाल विजय

- भूमिका
- ब्लैक होल की घटना
- प्लासी का युद्ध (23 जून 1757)
  - भूमिका
  - राजनीतिक कारण
  - आर्थिक कारण
  - तात्कालिक कारण
  - युद्ध का घटना क्रम
  - प्लासी युद्ध का प्रभाव
  - राजनीतिक प्रभाव
  - आर्थिक प्रभाव
  - विश्लेषण
- बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर 1764)
  - पृष्ठभूमि
  - राजनीतिक कारक
  - आर्थिक कारक
  - *बक्सर युद्ध का प्रभाव*
  - अवध के साथ समझौता
  - इलाहाबाद की संधि
- बंगाल में द्वैध शासन (1765-72)
  - पृष्ठभूमि/भूमिका
  - उत्तरदायी कारक
  - दुष्परिणाम

मैसूर विजय

- पृष्ठभूमि
- प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69ई०)
- द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84)
- तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92)
- चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799)

आंग्ल मराठा संबंध/मराठा विजय

- भूमिका
- प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82)
- द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1803-06)
- तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-19)
- मराठा पतन के कारण

- राजनीतिक कारण
- सामाजिक-सांस्कृतिक कारण
- आर्थिक कारण

सिंध विजय

- पृष्ठभूमि
- कारण
- समीक्षा

पंजाब विजय/पंजाब का अधिग्रहण

- भूमिका/पृष्ठभूमि
- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46)
- द्वितीय आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49)

3. *भारतीय रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति*

- रिंगफेस या घेरे या मध्य राज्य की नीति
- अधीनस्थ पार्थक्य की नीति
- अधीनस्थ संघ की नीति
- समान संघ की नीति

ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीति

- भूमिका

वेलेजली की सहायक संधि

- भूमिका
- विशेषताएं
- अंग्रेजों को लाभ
- भारतीय राज्यों को हानि

डलहौजी की विलय नीति

- भूमिका
- व्यपगत का सिद्धांत
- समीक्षा
- ब्रिटिश साम्राज्य पर सकारात्मक प्रभाव
- नकारात्मक प्रभाव

पड़ोसी देशों के प्रति ब्रिटिश नीति

- भूमिका
- भूटान के साथ संबंध
- नेपाल के साथ संबंध
- बर्मा के साथ संबंध
    - प्रथम बर्मा युद्ध (1824-26)
    - द्वितीय बर्मा युद्ध (1852-53)
    - तृतीय बर्मा युद्ध (1885-86)
- तिब्बत के साथ संबंध
- उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती देशों के साथ संबंध
- अफगानिस्तान के साथ संबंध

प्रशासनिक विकास

- सिविल सेवा
- सिविल सेवा से संबंधित कुछ आयोग
- पुलिस
- सेना
- सेना से संबंधित प्रमुख आयोग

न्यायिक सेवा

- भूमिका
- वारेन हेस्टिंग्स के अधीन सुधार (1772-1785)
- कॉर्नवालिस के अधीन सुधार (1786-1793)
- कॉर्नवालिस संहिता
- विलियम बेंटिक के अधीन सुधार (1828-1835)
- अन्य तथ्य
- स्थानीय प्रशासन

4. *ब्रिटिश शासन के दौरान संवैधानिक विकास (1773-1935) (Constitutional Development during British Government)*

- 1773 ई. का रेग्यूलेटिंग एक्ट
    - कंपनी पर संसदीय नियंत्रण की स्थापना
    - कंपनी के संविधान में बदलाव
    - गवर्नर की जगह पर गवर्नर जनरल
    - सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना
- 1784 का पिट्स इंडिया एक्ट
    - संसदीय नियंत्रण का बढ़ना

- गवर्नर जनरल के अधिकार में वृद्धि
- 1786 का संशोधन अधिनियम
- 1793 का चार्टर एक्ट
  - गवर्नर जनरल के अधिकारों में वृद्धि
- 1813 का चार्टर एक्ट
  - कंपनी के व्यापारिक एकाधिकार की समाप्ति
  - शिक्षा के संदर्भ में
  - इसाई मिशनरियों के संदर्भ में
- 1833 का चार्टर एक्ट
  - बोर्ड ऑफ कंट्रोल के संदर्भ में
  - गवर्नर जनरल के संदर्भ में
  - दासता की समाप्ति का प्रावधान
- 1853 का अधिनियम
  - प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर प्रशासनिक नियुक्ति
  - विधि सदस्य को पूर्ण सदस्य की मान्यता
- 1858 का अधिनियम
  - भारत से कंपनी शासन की समाप्ति
  - ब्रिटेन में परिवर्तन
  - भारत में परिवर्तन
- 1861 का अधिनियम
  - विभागीय प्रणाली/कैबिनेट सिस्टम की शुरूआत
  - वायसराय को अध्यादेश जारी करने का अधिकार
  - 1892 का अधिनियम
  - पहली बार निर्वाचित पद्धति सीमित रूप से स्वीकार
  - सदस्यों के संदर्भ में
- 1909 का अधिनियम
  - मार्ले-मिण्टो सुधार
  - पृथक निर्वाचन पद्धति की शुरूआत
  - समीक्षा
- 1919 का अधिनियम
  - केंद्र स्तर पर परिवर्तन
  - केंद्र में द्विसदनीय व्यवस्था का आरंभ
  - प्रांतों में द्वैध शासन की शुरूआत
  - सांप्रदायिक निर्वाचन पद्धति की विस्तार समीक्षा
- 1935 का अधिनियम
  - केंद्र स्तर पर परिवर्तन
  - केंद्र स्तर द्वैध शासन की शुरूआत
  - समीक्षा
- गवर्नन-जनरल और भारत के वायसराय

5. *ब्रिटिश शासकों की आर्थिक नीति एवं प्रभाव*

- ब्रिटिश पूर्व भारतीय अर्थव्यवस्था

ब्रिटिश आर्थिक नीतियाँ

- उपनिवेशवाद एवं उसके चरण
  - अर्थ
  - प्रथम चरण
  - द्वितीय चरण
  - तृतीय चरण

भारत में ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था

- भूमिका
- स्थायी बन्दोबस्त (1793) (Permanent settlement)
  - पृष्ठभूमि
  - उद्देश्य
  - विशेषताएँ
  - स्थायी बन्दोबस्त के दुष्प्रभाव
  - भारतीयों के संदर्भ में
- रैय्यतवाड़ी बंदोबस्त (1820) (Ryotwari system)
- महालवाड़ी बंदोबस्त (1822) (Mahalwari system)
- कृषि के वाणिज्यीकरण के कारण
  - नकारात्मक प्रभाव
  - सकारात्मक प्रभाव
- वि-औद्योगीकरण: परंपरागत उद्योगों का पतन
- (De-industrialization: Ruination of Traditional Industries)
  - वि-औद्योगीकरण के कारण
  - वि-औद्योगीकरण के प्रभाव

- कृषकों की बढ़ती हुयी दरिद्रता
- पुराने जमींदारों की तबाही तथा नई जमींदारी व्यवस्था का उदय
- कृषि में स्थिरता एवं उसकी बर्बादी

- आधुनिक उद्योगों का विकास
    - सीमित विकास
    - राष्ट्रीय बुर्जुआ वर्ग का उदय
    - आर्थिक विकास

6. ***ब्रिटिश भारत में औपनिवेशिक नीतियाँ***

(Colonial policies in British India)

भारत में आधुनिक शिक्षा का विकास

- शिक्षा नीति के विकास का प्रारंभिक इतिहास
- प्राच्य-आंग्ल विवाद
    - प्राच्यवादी
    - आंग्लवादी
- 1854 का वुड डिस्पैच
- हंटर शिक्षा आयोग (1882-83)
- लार्ड कर्जन की शिक्षा नीति और विश्वविद्यालय आयोग 1902
- सैडलर आयोग, (1917-19)
- हार्टोग समिति, 1929
- मौलिक शिक्षा अथवा वर्धा योजना
- 1944 की सार्जेंट योजना
- पाश्चात्य शिक्षा नीति का प्रभाव
- भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में अंग्रेजी शिक्षा का योगदान
- अंग्रेजों की शिक्षा नीति का मूल्यांकन

भारत में प्रेस का विकास

- भारत में प्रेस के विकास का इतिहास
- प्रेस पर प्रतिबंध
- भारतीय राष्ट्रवाद में प्रेस की भूमिकाएं एवं प्रभाव

रेलवे

- पृष्ठभूमि
- रेलवे का विकास
- प्रथम चरण (1849-69 ई.)
- द्वितीय चरण (1869-82 ई.)
- तृतीय चरण (1882-1924 ई.)
- चौथा चरण (1924-48 ई.)
- पाँचवा चरण (1948-52 ई.)
- परिणाम
    - सकारात्मक परिणाम
    - नकारात्मक परिणाम
- धन की निकासी
- अंग्रेजों की अकाल नीति
    - पृष्ठभूमि
    - अकाल नीति आयोग
- औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रवादी आलोचना
- भारतीय उद्योगपति एवं भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस

7. ***ब्रिटिश साम्राज्य के विरूद्ध विद्रोह***

(Revolt Against British Empire)

- 1857 का विद्रोह
- 1857 विद्रोह का कारण
- विद्रोह का प्रारंभ और विस्तार
- विद्रोह की असफलता के कारण
- विद्रोह का प्रभाव
- प्रशासनिक परिवर्तनों के उद्देश्यों एवं परिणाम
- विद्रोह का चरित्र एवं स्वरूप

भारत में जनजातीय आंदोलन/विद्रोह

- उत्तरदायी कारण
- प्रमुख जनजातीय विद्रोह
    - मुण्डा विद्रोह
    - ताना भगत आंदोलन
    - चुआर का विद्रोह
    - खासी विद्रोह
    - भील विद्रोह

    - कोल विद्रोह
    - रमोसी विद्रोह
    - रम्पा विद्रोह
- जनजातीय विद्रोहों का स्वरूप
- महत्व/परिणाम
- असफलता के कारण
- किसान आंदोलन/विद्रोह
    - किसान विद्रोह के कारण
    - विभिन्न किसान विद्रोह/आंदोलन
    - कृषक आंदोलन की उपलब्धियाँ
    - विभिन्न प्रांतों में किसानों की गतिविधियाँ
    - भारत में श्रमिका आंदोलन
    - स्वदेशी आंदोलन के समय श्रमिक आंदोलन
    - वामपंथी विचार और श्रमिक आंदोलन

8. 19वीं सदी के सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन
- भारतीय पुनर्जागरण सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलन
- विभिन्न सामाजिक सुधार आंदोलन
- राजाराम मोहन राय एवं ब्रह्म समाज
- यंग बंगाल आंदोलन
- पं० ईश्वर चन्द्र विद्यासागर
- स्वामी दयानंद सरस्वती और आर्य समाज
- थियोसोफिकल सोसायटी
- स्वामी विवेकानंद और रामकृष्ण मिशन
- इस्लाम धर्म सुधार आंदोलन
- पारसी धर्म सुधार आंदोलन
- सिख धर्म सुधार आंदोलन
- सुधार आंदोलन यूरोपीय पुनर्जागरण का प्रभाव
- सुधार आंदोलन उपलब्धियाँ एवं सीमाएं
- ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीति

1 यूरोपीय कंपनियों का आगमन तथा भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना तथा विस्तार (Arrival of European Companies and British Establishment and Expansion in India)

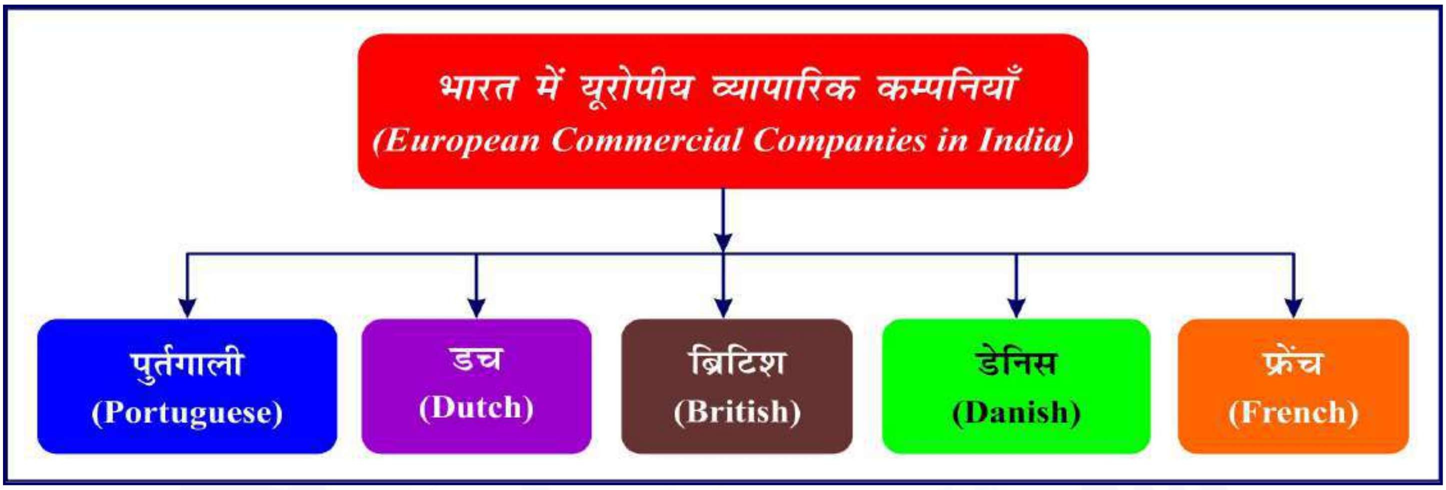

भारत में यूरोपीय कम्पनियों का आगमन
(Arrival of European Companies)

15वीं शताब्दी से 19वीं शताब्दी के मध्य यूरोप में अप्रत्याशित आर्थिक बदलाव हुए। इस समयावधि में कृषि एवं विशेष रूप से विनिर्माण के क्षेत्र में अपनाई गई प्रौद्योगिकी के आधार पर व्यापार एवं वाणिज्य में तीव्र वृद्धि हुई। ये बदलाव यूरोप में तब शुरू हुए, जब यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियाँ नए विकल्पों की खोज में निकली।

यूरोपीय देशों ग्रीस तथा रोम के साथ भारत के व्यापारिक संबंध बहुत पहले से रहे हैं। मध्यकाल में यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया के साथ भारत का व्यापार अनेक मार्गों से चलता था। एशिया का माल यूरोप तक पहुँचने से पहले अनेक राज्यों और हाथों से गुजरता था। फिर भी यह व्यापार बहुत लाभदायक होता था। एशिया में इस व्यापार का अधिकांश भाग अरब व्यापारियों द्वारा चलाया जाता था, तथा इसके भूमध्यसागरीय और यूरोपीय भाग पर इटली का लगभग एकाधिकार था।

- यूरोपीय शक्तियों में भारत में सबसे पहले पुर्तगाली कंपनी ने प्रवेश किया। 17 मई, 1498 में पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पर पहुंचकर भारत के लिए नए समुद्री मार्ग की खोज की।

पुर्तगाली *(Portuguese)*

भारत में आने वाले यूरोपीय व्यापारियों में पुर्तगाली प्रथम थे जो 15वीं सदी में (भौगोलिक खोजों के संदर्भ में) वास्कोडिगामा के नेतृत्व में पहुँचे। वास्कोडिगामा को यहाँ के व्यापार से (मसाला आदि) लगभग 60 गुना अधिक फायदा हुआ। तत्पश्चात् 'लिस्बन' यूरोप मे भारतीय वस्तुओं के व्यापार केन्द्र के रूप में उभरा। पुर्तगाली व्यापारियों का मुख्य उद्देश्य भारतीय मसालों का व्यापार था जिसकी यूरोपीय परिवेश में बहुत माँग थी। पुर्तगालियों ने 1503 ई. में पहली **फैक्ट्री 'कोचीन'** में लगाई जिसका विस्तार विभिन्न 'पुर्तगाली गवर्नरों के समय हुआ।

प्रथम पुर्तगाली गवर्नर **फ्रांसिस डी अल्मेडा (1505-09 ई.)** ने **नीले पानी की नीति**, चलाई जिसका उद्देश्य हिन्द महासागर के क्षेत्र से होने वाले व्यापार पर नियंत्रण करना था। इसमें कार्टेज व्यवस्था के तहत परमिट प्रणाली लागू की गई। इस प्रकार पुर्तगालियों के समय से ही अधिकाधिक आर्थिक व्यापारिक लाभ हेतु क्षेत्रीय प्रभाव स्थापित करने की कोशिश होती रही।

पुर्तगाली **गवर्नर अल्बुकर्क (1509-15 ई.)** को पुर्तगाली व्यापारिक साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है क्योंकि इसने उसे व्यवस्थित रूप से संगठित किया और **कोचीन** को मुख्यालय बनाया। 1510 ई. में बीजापुर से गोवा को छीना जो व्यापारिक दृष्टि से काफी महत्त्वपूर्ण था।

गवर्नर **नीनो डी. कुन्हा (1529-38 ई.)** ने मुख्यालय को कोचीन की जगह गोवा में स्थानांतरित किया। व्यापारिक हितों के कारण ही गुजरात राज्य के साथ पुर्तगालियों ने लम्बे समय तक संघर्ष किया।

पतन के कारण

भारत में पुर्तगाली वाणिज्यवादी नीति सफल नहीं रही क्योंकि उन्होंने अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था के विकास के लिए प्रयास नहीं किया और वहाँ कृषि एवं पशुचारी व्यवस्था ही जारी रही इसलिए व्यापारिक प्रतिस्पर्धा में वे पिछड़ गए। चूंकि पुर्तगाली भौगोलिक एवं व्यापारिक खोजों के प्रारंभकर्त्ता देश थे इसलिए कुछ समय तो इनका प्रभाव बना रहा परन्तु जब अन्य देश (डच, ब्रिटेन आदि) इस प्रतिस्पर्धा में शामिल हुए तो अपनी दुर्बलताओं के कारण पुर्तगाली वाणिज्य का पतन प्रारम्भ हो गया। साथ ही, पुर्तगालियों ने भारत में अपने प्रभाव वाले क्षेत्रों में बलात् धर्म परिवर्तन की नीति अपनाई, जिसके प्रतिरोध के कारण वे कुछ ही क्षेत्रों में सिमट कर रह गए।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- 1498 को वास्कोडिगामा ने कालीकट तट तक की यात्रा की।
- पुर्तगालियों ने भारत में पहला दुर्ग कोचीन में 1503 में स्थापित किया।
- दूसरा दुर्ग 1505 में स्थापित किया।
- फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को भारतीय क्षेत्र का गवर्नर 1505 में बनाया गया।
- अल्मेडा ने गुजरात और मिस्र के संयुक्त बेड़े को 1509 में पराजित किया।
- मलाया द्वीप में स्थित मलक्का पर पुर्तगालियों ने 1511 में अधिकार कर लिया।
- 1530 में पुर्तगालियों ने गोवा को अपने भारतीय राज्य की राजधानी बना ली।
- 1535 में पुर्तगालियों ने दीव पर अधिकार कर लिया।
- 1559 में दमन पर अधिकार कर लिया।
- 1663 में मालाबार के सभी दुर्गों को डचों ने जीतकर पुर्तगालियों को भारत से निर्णायक रूप से खदेड़ दिया।

डच (Dutch)

भारत में आने वाले यूरोपीय व्यापारियों में पुर्तगाालियों के पश्चात् डचों का आगमन हुआ। 1581 ई. में डचों पर से स्पेन का प्रभाव समाप्त होने के पश्चात, डचों ने अपनी परिस्थितियों के अनुरूप अपनी वाणिज्यवादी नीति का प्रतिपादन किया और उसका प्रसार किया। डच प्राथमिक रूप से इंडोनेशिया में केन्द्रित थे तथा मसालों के व्यापार में संलग्न थे। जब भारत के साथ इनका सम्पर्क बना तब इन्होंने अपने व्यापार में सूती वस्त्र के व्यापार को भी शामिल किया जिससे इन्हें अत्यधिक लाभ मिला।

डचों की पहली फैक्ट्री 1605 ई. में पूर्वी तट पर **मसूलीपट्टनम्** में स्थापित हुई इन्होंने **'पुलिकट'** को अपना मुख्यालय बनाया परन्तु आगे चलकर **'नागपटट्नम्'** को मुख्यालय बना दिया। इनकी अधिकांश फैक्ट्रियां पूर्वी तट पर थीं क्योंकि ये इंडोनेशिया से भी जुड़े थे। 17वीं सदी में जब व्यापारिक प्रतिस्पर्धा की वृद्धि हुई तो डचों को ब्रिटेन से कड़ी प्रतिस्पर्धा मिली और नौसैनिक दृष्टि से कमजोर होने के कारण 1759 ई. में **बेदरा की लड़ाई** में अंग्रेजों से इन्हें पराजय मिली तत्पश्चात् ये सिर्फ एक व्यापारिक समूह बन कर रह गये।

- भारत के पूर्वी भाग, पूर्वी तटीय क्षेत्र और पश्चिमी तट पर डचों ने अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की।
- 1605 में मसूलीपट्टनम्, 1610 पुलिकट में, 1616 सूरत में 1641 में, बिमिलिपट्टम में, 1645 में करिकल में, 1663 में चिनसुरा में, 1658 में कासिम बाजार, पटना, बालासोर व नागापट्टम में तथा 1663 में कोचीन में डचों ने अपनी फैक्ट्रियाँ स्थापित की।

ब्रिटिश (British)

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना 1600 ई. में एक निजी कम्पनी के रूप में हुई थी, जिसे 15 वर्षों के लिए व्यापारिक एकाधिकार मिला था। इस एकाधिकार को समय-समय पर बढ़ाया जाता रहा, साथ ही साथ इस पर निरंतर ब्रिटिश सरकार का हस्तक्षेप भी बढ़ता रहा।

कम्पनी के संचालन हेतु एक प्रबंधकीय समिति थी जिसमें एक निदेशक, एक उपनिदेशक तथा 24 सदस्य होते थे। इन सबका चुनाव व्यापारियों की आम सभा द्वारा होता था।

आगमन का उद्देश्य

इस कम्पनी की स्थापना का उद्देश्य ब्रिटिश व्यापारियों के व्यापारिक हितों के हिसाब से अधिकाधिक लाभ की प्राप्ति करना था। व्यापारिक मदों में मुख्यत: मसालें थे पर जल्दी ही इसमें वस्त्र तथा अन्य उपयोगी वस्तुएँ शामिल हो गई, परन्तु आरम्भिक वर्षों में व्यापार का सन्तुलन भारत के ही पक्ष में रहा।

अंग्रेजों ने **1608 ई.** में सर्वप्रथम **सूरत** में व्यापारिक फैक्ट्री की स्थापना का प्रयास किया, जिसके लिए तत्कालीन ब्रिटिश सम्राट **'जेम्स प्रथम'** ने अपने दूत **विलियम हॉकिंस** को जहाँगीर के दरबार में अनुमति हेतु भेजा था। विलियम हॉकिंस ने 1609 में बादशाह जहाँगीर से अजमेर में मिलकर सूरत में बसने की आज्ञा मांगी।

यहाँ के व्यापारियों और पुर्तगालियों द्वारा विरोध किया गया परिणामस्वरूप उसे स्वीकृति नहीं मिली। हालांकि अंग्रेज **कैप्टन मिडिलटन** द्वारा स्वाल्ली में पुर्तगालियों के जहाजी बेडे को हराए जाने से प्रभावित होकर **जहाँगीर** ने **1613** में फैक्ट्री स्थापित करने की स्वीकृति दे दी। यह इस बात का संकेतक है कि ईस्ट इंडिया कम्पनी एक निजी कम्पनी थी, पर उसे यथासम्भव शासकीय सहयोग प्रारंभ से ही मिला।

- 1632 ई. के **सुनहरा फरमान** के तहत गोलकुण्डा के राजा ने 500 पैगोडा वार्षिक कर के बदले अंग्रेजों को **गोलकुण्डा** राज्य के बंदरगाहों से व्यापार करने की अनुमति प्रदान की।
- 1639 ई में अंग्रेजों ने **मद्रास** में अपनी फैक्ट्री **'फोर्ट सेन्ट जार्ज'** के नाम से बनाई। 1668 ई. में बम्बई की फैक्ट्री स्थापित हुई।
- 1698 ई. में कलकत्ता की फैक्ट्री **'फोर्ट विलियम'** नाम से स्थापित हुई, जिसे प्रथम प्रेसीडेन्सी भी बनाया गया। इस प्रकार मद्रास, बम्बई एवं कलकत्ता में फैक्ट्री की स्थापना से तीनों महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में ब्रिटिश कम्पनी का प्रभाव हो गया।
- 1651 ई. में अंग्रेजों ने अपनी फैक्ट्री **हुगली** में स्थापित की। 1651 ई. में ही बंगाल के सूबेदार शाहशुजा ने 3000 रू. वार्षिक शुल्क के बदले बंगाल क्षेत्र में अंग्रेजों को मुक्त व्यापार करने की अनुमति दे दी।
- 1698 ई. में **'फोर्ट विलियम'** की स्थापना हुई, इस स्थल की प्राप्ति बंगाल के सूबेदार **'अजीमुश्शान'** द्वारा **सुतानाती, कोलकाता** एवं **गोविंदपुर** नामक तीन गांवों की जमींदारी देने से मिली थी। जिसके बदले में अंग्रेजों को 1200 रुपये देने थे।
- 1717 ई. में कम्पनी का एक मिशन **जॉन सरमन** की अध्यक्षता में **फर्रूखसियर** के दरबार में गया था जिसके पश्चात् एक शाही फरमान के तहत् 3000 वार्षिक शुल्क के बदले बंगाल क्षेत्र में मुक्त व्यापार करने का अधिकार दे दिया गया।

महत्त्वपूर्ण तथ्य

- ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1600 ई. में हुई।
- विलियम हॉकिन्स जहांगीर के दरबार में 1609 में आया था।
- 1611 में कैप्टन मिडिलटन सूरत के मुगल गवर्नर से वहां व्यापार करने का अनुमत प्राप्त किया।
- सूरत में ईस्ट इंडिया कंपनी ने स्थायी फैक्टरी की स्थापना 1613 में की।
- 1611 में कंपनी ने दक्षिण भारत के मसूलीपट्टनम में अपनी पहली फैक्टरी स्थापित की।
- 1633 में कंपनी ने पूर्वी भारत में हरिहरपुर, बालासोर में अपनी पहली फैक्टरी स्थापित की।
- 1639 में कंपनी ने स्थानीय राजा से लीज पर मद्रास हासिल किया।
- 1651 में कंपनी को हुगली (बंगाल) व्यापार करने की अनुमत दी गयी।
- 1662 में ब्रिटिश सम्राट चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाली राजकुमारी (कैथरीन ऑफ ब्रेगेंजा) से विवाह करने के बदले दहेज के बदले में बॉम्बे दिया गया।
- 1717 में मुगल सम्राट फर्रुखसियर द्वारा जारी फरमान जिसे कंपनी का मैग्नाकार्टा भी कहा गया, ने कंपनी को भारी मात्रा में व्यापार संबंधी छूट प्रदान की।

डेनिस (Danish)

भारत में यूरोपीय व्यापारिक शक्तियों के आगमन के संदर्भ में **डेनमार्क के व्यापारियों** (डेन्स) का उल्लेख करना भी जरूरी हैं। **डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी** की स्थापना **1616 ई.** में हुई। इसने 1620 ई. में **ट्रैंकोबर (तमिलनाडु)** में पूर्वी तट पर एक कारखाना स्थापित किया।

- डेनिस अपनी व्यापारिक गतिविधियों से अधिक मिशनरी गतिविधियों के लिए जाने जाते थे। डेनिस ने कलकत्ता के नजदीक **सेरामपुर में 1755 ई.** में मुख्य व्यापारिक बस्ती की स्थापना की और यह इनकी व्यापारिक गतिविधियों का मुख्य केन्द्र रहा। भारत में अपनी वाणिज्यिक अवस्थापनाएँ, जो कभी भी महत्त्वपूर्ण नहीं रही, 1854 ई. में ब्रिटिश सरकार को बेच दी।

फ्रेंच (French)

फ्रांसीसी केंद्रों की स्थापना

1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना, तत्कालीन फ्रांसीसी शासक **लुई 14वें** के समय हुई, जिसका मुख्य उद्देश्य अपने अन्य समकालीन यूरोपीय कम्पनियों की भांति वाणिज्यवादी नीतियों के तहत एशियाई व्यापार का फायदा उठाकर फ्रांस को आर्थिक दृष्टि से एक समृद्ध राष्ट्र बनाना था।

इस कम्पनी का निर्माण फ्रांस की सरकार द्वारा किया गया था तथा इसका सारा खर्च भी सरकार ही वहन करती थी। इसे सरकारी व्यापारिक कम्पनी भी कहा जाता था क्योंकि यह कंपनी सरकार द्वारा संरक्षित व सरकारी आर्थिक सहायता पर निर्भर करती थी।

- सूरत में 1668 ई. में फ्रांसीसियों की प्रथम कोठी की स्थापना **फैंक कैरो** द्वारा की गयी।
- फ्रांसीसियों द्वारा दूसरी व्यापारिक कोठी की स्थापना गोलकुंडा में मार्टिन द्वारा सन् 1673 ई. में की गयी। बंगाल के नवाब शाइस्ता खाँ ने फ्रांसीसियों को एक जगह किराये पर दी जहाँ **चंद्रनगर** की सुप्रसिद्ध कोठी की स्थापना की गई।
- डचों ने 1693 ई. में पांडिचेरी को फ्रांसीसियों के नियंत्रण से छीन लिया, किंतु 1697 ई. के **रिजविक समझौते** के अनुसार उसे वापस कर दिया।
- फ्रांसीसियों द्वारा 1721 ई. में मॉरिशस, 1725 ई. में माहे (मालाबार तट) एवं 1739 ई. में कराइकल पर अधिकार कर लिया गया। 1742 ई. के पश्चात् व्यापारिक लाभ कमाने के साथ-साथ फ्रांसीसियों की राजनीतिक महत्त्वाकांक्षाएँ भी जागृत हो गयीं। परिणामस्वरूप अंग्रेज और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध छिड़ गया। इन युद्धों को **'कर्नाटक युद्ध'** के नाम से जाना जाता है।

पतन के कारण

भारत में फ्रांसीसियों के पतन का सर्वाधिक प्रमुख कारण उनका सरकारी उपक्रम के रूप में होना था क्योंकि तत्कालीन फ्रांस में **निरंकुश राजतंत्र** था और उनके **अतिशय हस्तक्षेप** के कारण **व्यापारिक नीतियों का समुचित विकास** संभव नहीं हो पाया। फ्रांसीसी अधिकारियों में संबंध सहयोग एवं समन्वय का अभाव भी था।

इसके अतिरिक्त **फ्रांस** लगातार **यूरोपीय युद्धों** में उलझा रहा एवं ब्रिटेन की तुलना में **कमजोर नौसेना** तथा भारतीय नेतृत्व की **नीतियों में अदूरदर्शिता** आदि के कारण भी **फ्रेंच कम्पनी** असफल रही।

कर्नाटक में एंग्लो-फ्रेंच प्रतिस्पर्धा
(Anglo-French Competition in Karnataka)

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 1668 ई. में फ्रांसीसियों ने सूरत में पहली व्यापारिक कोठी स्थापित करने में सफलता पायी। **1690-92 ई.** के दौरान उन्होंने **कलकत्ता** में भी व्यापारिक केन्द्र स्थापित कर लिया।

- अठारहवीं शताब्दी के आरंभिक दो वर्षों में फ्रांसीसी कंपनी को व्यापार में काफी प्रगति हुई। **फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी** तथा **ईस्ट इंडिया कंपनी** के बीच संघर्ष का मुख्य कारण **व्यापार में एकाधिकार** और **राजनीतिक नियंत्रण** था।
- भारत में अंग्रेजी तथा फ्रांसीसी दोनों ही कम्पनियों का उद्देश्य व्यापार से अधिकाधिक लाभ उठाना तथा भारत से कच्चे माल तथा अन्य समान को सस्ते दामों पर खरीदना था। यह तभी संभव था जब उन्हें व्यापार पर एकाधिकार प्राप्त हो जाए।
- अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए दोनों कम्पनियों में भारत की राजनीति में हस्तक्षेप कर नियंत्रण करने की प्रतिस्पर्धा शुरू हो गयी क्योंकि बिना राजनैतिक नियंत्रण के व्यापार में अधिक लाभ उठाना संभव नहीं हो पा रहा था।
- 1741 ई. में **पांडिचेरी** के गवर्नर पद पर **डूप्ले की नियुक्ति** के साथ ही उसके राजनीतिक उद्देश्य भी सामने आने लगे। **1746 ई.** में फ्रांसीसियों ने **मद्रास पर कब्जा** कर लिया।
- तत्कालीन भारत का स्वरूप एकीकृत न होकर स्थानीय क्षेत्रों में विभक्त था। इस स्थिति का लाभ सभी यूरोपीय कंपनियों को हुआ। दक्षिणी क्षेत्रों में विशेषकर कर्नाटक, मद्रास और पांडिचेरी में राजनीतिक अनिश्चितता कायम थी।
- 17वीं तथा 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश तथा फ्रांसीसी के बीच यूरोप में आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के लिए युद्ध आरंभ हुआ, जिसका प्रभाव अन्य देशों में भी देखा गया। संसार के प्रत्येक कोने में जहाँ ये दोनों कम्पनियाँ कार्यरत थी वहाँ भी उसके बीच संघर्षपूर्ण संबंध रहे।
- भारत में हुए कर्नाटक युद्ध भी इसी संघर्ष के परिणाम थे। उस समय फ्रांसिसियों का मुख्य कार्यालय पांडिचेरी तथा अंग्रेजों की मुख्य बस्तियाँ, मुंबई, मद्रास तथा कर्नाटक में थी।

इंग्लैंड का विशेष ध्यान ऑस्ट्रिया की ओर था, इसलिए उनका कोई जहाजी बेड़ा मद्रास के समुद्री तट पर तैनात नहीं था, लेकिन वहां फ्रांसीसी जहाजी बेड़ा उपस्थित था। इस स्थिति का फ्रांसीसियों ने पूरा लाभ उठाया और **मद्रास पर कब्जा** कर लिया।

- दो वर्ष बाद यूरोप में अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध की समाप्ति **एक्स ला शापेल की संधि** के साथ हुई। इस संधि के अनुसार **मद्रास ईस्ट इंडिया कंपनी** को लौटा दिया गया।

1746 से 1765 ई. के बीच अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध चलता रहा। कर्नाटक, दक्कन के सूबेदार के अधीन एक प्रांत था जिसका शासन नवाब के हाथों में था। व्यापारिक अधिकार के लिए अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच तीन युद्ध हुए।

व्यापारिक अधिकार के लिए अंग्रेजों और फ्रांसीसियों के बीच युद्ध

- प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)
- द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54 ई.)
- तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.)

प्रथम कर्नाटक युद्ध प्रारंभ होने का तात्कालिक कारण एक अंग्रेज अधिकारी कैप्टन बर्नेट द्वारा कुछ फ्रांसीसी जहाजों पर कब्जा कर लेना था। डूप्ले ने मॉरिशस के फ्रांसीसी गवर्नर ला बूर्दने की सहायता से मद्रास को घेर लिया।

- यद्यपि अंग्रेजी गवर्नर **मोर्श ने 21 सितम्बर, 1746 ई. को आत्मसमर्पण** कर दिया किन्तु डूप्ले का रणनीतिक लक्ष्य **'फोर्ट सेन्ट डेविस'** को जीतना था। लेकिन वह इसे जीत पाने में असफल रहा। भारत में फ्रांसीसियों के समक्ष अंग्रेज इस समय बिल्कुल असहाय थे। इसी समय **'सेन्ट टोमे'** नामक एक और युद्ध फ्रांसीसी सेना और कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन के बीच लड़ा गया। इस युद्ध में फ्रांसीसी विजयी रहे।

प्रथम कर्नाटक युद्ध का अंत **1748 ई. में ऑस्ट्रिया** के उत्तराधिकार युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हुई **'एक्स ला शापेल की संधि'** से हुआ। इस संधि की शर्तों के अनुसार **मद्रास अंग्रेजों** को वापस कर दिया गया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-1754 ई.)

कर्नाटक का द्वितीय युद्ध हैदराबाद तथा कर्नाटक के विवादास्पद उत्तराधिकारियों के कारण हुआ। डूप्ले की राजनीकि महत्त्वाकांक्षाएँ कर्नाटक के प्रथम युद्ध की सफलता के पश्चात् बढ़ने लगी थीं। भारत में ब्रिटेन और फ्रांस की कंपनियों ने एक-दूसरे के विरोधी गुटों को अपना समर्थन देकर आग में घी डालने का काम किया।

- डूप्ले ने नवाब पद के लिए चन्दा साहब को समर्थन दिया तथा दक्कन की सूबेदारी के लिए **मुजफ्फरजंग** का समर्थन किया। अंग्रेजों ने इनके प्रतिद्वन्द्वियों अनवरुद्दीन एवं नासिरजंग को अपना समर्थन दिया।
- 1749 ई. में अंबूर में **चंदा साहब** ने **अनवरुद्दीन** को पराजित कर मार डाला तथा कर्नाटक के अधिकांश हिस्सों पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- वहीं दूसरी ओर दक्कन की सूबेदारी हेतु लड़े गए युद्ध में **मुजफ्फरजंग** अपने भाई **नासिरजंग** से पराजित हो गया। मुजफ्फरजंग अपने भाई नासिरजंग की मृत्यु के पश्चात् 1750 ई. में दक्कन का सूबेदार बन गया।
- 1751 ई. में इसी युद्ध के दौरान **क्लाइव** द्वारा अर्काट का घेरा डाला गया जो क्लाइव की प्रथम कूटनीतिक विजय मानी जाती है।

इस युद्ध का विस्तार से विवेचन न करते हुए यह कहना ही पर्याप्त होगा कि इस युद्ध में फ्रांस तथा फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले को अपूर्णीय क्षति हुई। फ्रांसीसी सरकार ने डूप्ले को वापस बुला लिया तथा गोडेहू को अगला गवर्नर बनाकर भेजा।

गोडेहू के प्रयासों से अंग्रेजी कंपनी के साथ जनवरी **1754 ई.** में **'पांडिचेरी की संधि'** हुई जिसके तहत दोनों पक्ष युद्ध विराम पर सहमत हुए। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि यह युद्ध अंग्रेजों के पक्ष में रहा।

तृतीय कर्नाटक युद्ध (1756-63 ई.)

यह युद्ध यूरोप में ब्रिटेन एवं फ्रांस के बीच चल रहे सप्तवर्षीय युद्ध (1756-63 ई.) का भारतीय विस्तार था। 1760 ई. में वांडीवाश की लड़ाई हुई जिसमें अंग्रेजी सेना का नेतृत्व जनरल आयरकूट एवं फ्रेंच सेना का नेतृत्व काउंट लाली ने किया, इस युद्ध में फ्रेंच पराजित हुए।

- 1761 ई में ब्रिटिश सेना ने फ्रेंच मुख्यालय **पाण्डिचेरी** पर अधिकार कर लिया।
- 1763 ई. में सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति पर पेरिस की संधि हुई, जिसके तहत पांडिचेरी फ्रांस को वापस कर दिया गया। यह तय हुआ कि फ्रांसीसी भविष्य में किसी भी प्रकार से

भारतीय मामलों में राजनीतिक हस्तक्षेप नहीं करेंगे और सिर्फ एक व्यापारिक कम्पनी बनकर रहेंगे।

पेरिस की संधि का महत्त्व

1763 ई. की **पेरिस की संधि** का एक निर्णायक महत्त्व है क्योंकि इससे ब्रिटेन के एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी की प्रतिस्पर्धा की समाप्ति हुई। इसके पूर्व 1759 ई. के बेदरा के युद्ध से डच प्रतिद्वंद्विता समाप्त हो गई थी।

अतः अब ब्रिटिश अपने सभी यूरोपीय प्रतिद्वंद्वियों से निपट चुके थे और उन्हें भारतीय परिप्रेक्ष्य में स्वयं को स्थापित एवं प्रसारित करना था। इधर भारतीय परिप्रेक्ष्य में मुगल साम्राज्य के पतन के पश्चात् उभर रहा **मराठा विकल्प 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में हारकर** विकल्प की दौड़ से बाहर हो गया था, अतः अब एक शून्यता की स्थिति थी जिसमें ब्रिटेन को स्वयं को स्थापित करना था।

- 1757 में प्लासी विजय के साथ ब्रिटेन अब भारतीय राज्यों में सक्रिय प्रभाव स्थापित करने के लिए उत्सुक था अंततः कहा जा सकता है कि 1763 ई. की पेरिस संधि भी भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के क्रम में एक युग-विभाजक वर्ष है। परन्तु, संधि में यह शर्त रखी गई थी कि फ्रांसीसी भारत में सेना नहीं रख सकेंगे। इस संधि के बाद फ्रांसीसियों ने अंग्रेजों का विरोध करना छोड़ दिया और अपना सारा ध्यान व्यापार पर केंद्रित कर लिया। फ्रांसीसियों की पराजय ने भारत के लिए राजनीतिक गुलामी का मार्ग खोल दिया।

2 भारतीय राज्यों पर ब्रिटिश विजय (British Victory on Indian States)

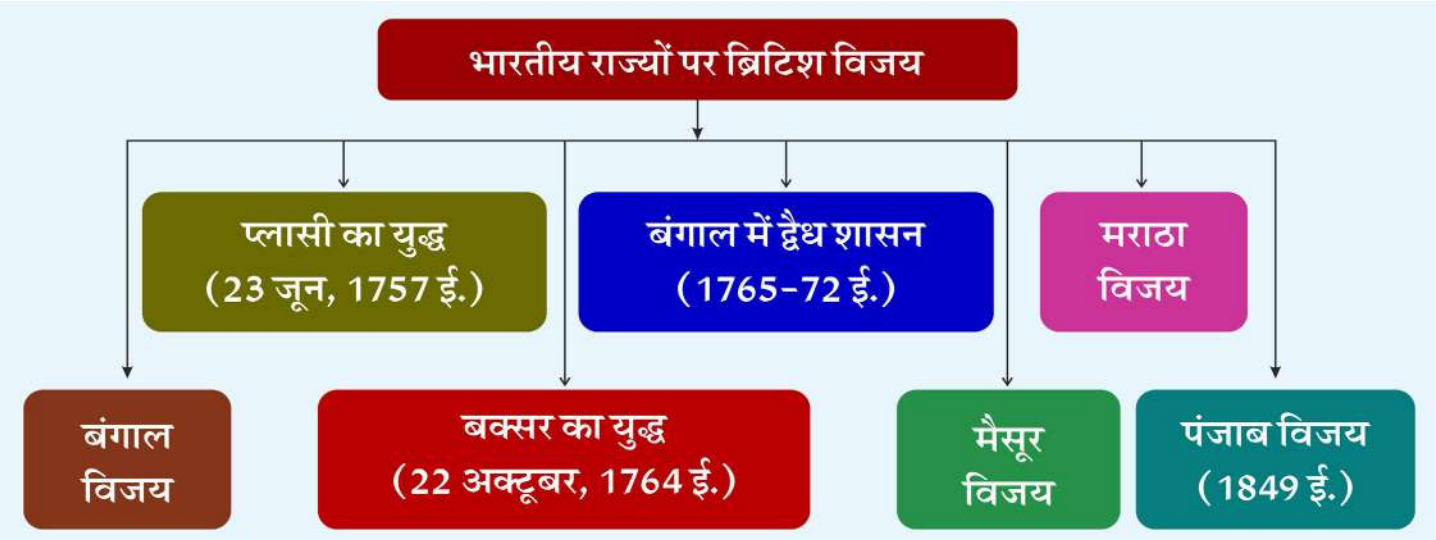

बंगाल विजय

भूमिका

भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना के क्रम में बंगाल विजय का निर्णायक महत्त्व है। इस विजय के पीछे तत्कालीन परिस्थितियों के साथ ही एक लंबी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि भी रही है, जिस हम राजनीतिक एवं आर्थिक संदर्भों में देख सकते हैं।

राजनीतिक स्तर पर दिल्ली सल्तनत की स्थापना के समय से ही बंगाल के राजनीतिक नेतृत्व द्वारा अलग एवं स्वतंत्र रहने वाली प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। उदाहरण के रूप में **बख्तियार खिलजी, बुगरा खाँ, मुर्शिद कुली खाँ** आदि को देख सकते हैं।

1707 ई. में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य का पतन प्रारंभ हुआ। इस संदर्भ में भी बंगाल स्वतंत्र होने वाले शुरूआती राज्यों में था। आर्थिक स्तर पर अपने भौगोलिक स्थिति एवं कृषि, उद्योग, व्यापार आदि की समृद्धि के कारण भी बंगाल महत्त्वपूर्ण था। इस प्रकार बंगाल भारतीय राज्यों में एक महत्त्वपूर्ण राज्य था, जिस पर आधिपत्य का राजनीतिक, सामरिक एवं आर्थिक महत्व था।

ब्लैक होल की घटना

ऐसा माना जाता है कि बंगाल के नवाब ने 146 अंग्रेज बंदियों को, जिसमें स्त्रियां और बच्चे भी शामिल थे, को एक छोटी कोठरी में बंद कर दिया था। जिसके पश्चात 20 जून, 1756 ई. की रात को बंद करने के बाद 23 जून को कोठरी को खोला गया तो उसमें 23 लोग ही जीवित पाए गए। इसमें हॉलवेल भी था जो जीवित बच गया। इस घटना को उसकी ही रचना मानी जाती है। इसलिए इस घटना को इतिहासकारों ने संदिग्ध माना है।

इतिहास में इस घटना का महत्व केवल इतना ही है कि अंग्रेजों ने इस घटना को आगे के आक्रामक युद्ध का कारण बनाए रखा। इस पक्ष में ब्रिजैन गुप्ता द्वारा 1959 में किए गए एक अध्ययन से पता चलता है कि ये घटना तो हुई है लेकिन इसमें प्रवेश करने वाले लोगों की संख्या 64 थी और जीवित बचे लोगों की संख्या 21 थी।

अंग्रेज नागरिकों पर हुए इस क्रूरता का बदला लेने के लिए अंग्रेज सरकार ने राबर्ट क्लाइव और एडमिरल वॉटसन को भेजा। छोटे युद्ध के बाद नवाब अंग्रेजों को उनके पहले की स्थिति में बहाल करने के लिए सहमत हुआ।

प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.)

भारत का यूरोप के साथ व्यापारिक संबंध प्राचीन काल से था।

यह व्यापार एशिया माइनर और भूमध्य सागर से होकर होता था।

व्यापार कई बाधाओं से गुजरने के बावजूद लाभदायक होता था। 1453 में उस्मानिया सल्तनत द्वारा एशिया माइनर के व्यापारिक मार्गों पर तुर्कों का अधिकार हो गया। इसके अतिरिक्त यूरोप और एशिया के व्यापार पर **वेनिस** और **जेनेवा** के व्यापारियों का एकाधिकार था और वे पश्चिमी यूरोप के राष्ट्रों को पुराने व्यापारिक मार्गों से होने वाले व्यापार में भागीदार नहीं बनाना चाहते थे। इन परिस्थितियों में पश्चिमी यूरोप के देशों ने नए व्यापारिक मार्गों की खोज करना प्रारंभ कर दिया, जिससे भारत और इंडोनेशिया के मसाला द्वीप से व्यापार प्रारंभ करना था।

नए व्यापारिक मार्गों के खोज करने के पीछे उद्देश्य यह था कि अरब और **वेनिस वासियों** के एकाधिकार को तोड़कर और तुर्कों से बिना शत्रुता के पूर्व के देशों के साथ व्यापार करना था। इसी क्रम में 15वीं शताब्दी के अंत तक यूरोपीय कंपनियों का भारत में आगमन प्रारंभ हुआ।

ब्रिटिश प्रभुसत्ता के विकास के संदर्भ में प्लासी का युद्ध एक मील का पत्थर था जिसने भारत में अंग्रेजों के पैर जमाने में आधार का काम किया। इस युद्ध के कारणों को हम राजनीतिक एवं आर्थिक संदर्भों में देख सकते हैं।

राजनीतिक कारण

राजनीतिक स्तर पर प्लासी के युद्ध के लिए कई आंतरिक एवं बाह्य तत्व उत्तरदायी थे। विशेषकर यह कि तत्कालीन **नवाब सिराजुद्दौला (1756-57 ई.)** के सत्ता प्राप्ति के समय से ही षड्यंत्रों का दौर जारी था। नवाब की **मौसी घसीटी बेगम**, पूर्णिया का नवाब शौकतजंग, सेनापति **मीर जाफर**, बैंकर जगत सेठ, व्यापारी अमीनचंद आदि सभी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपने-अपने हितों को लेकर सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यंत्र में शामिल थे।

बाह्य स्तर पर इस समय चल रहे सात वर्षीय युद्ध (1756-63 ई.) जो ब्रिटेन एवं फ्रांस के बीच में यूरोप में जारी था, की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इस लड़ाई के कारण इन दोनों देशों की कंपनियाँ बंगाल क्षेत्र में अपनी फैक्ट्रियों की किलेबंदी करना चाहती थी। ब्रिटेन अपनी फैक्ट्री **फोर्ट विलियम (कलकत्ता)** तथा फ्रांस अपनी **फैक्ट्री चंद्रनगर** की किलेबंदी करना चाहता था। जब सिराजुद्दौला ने इसकी अनुमति देने से इंकार कर दिया तब फ्रेंच कंपनी तो इसके लिए मान गई लेकिन ब्रिटिश कंपनी किलेबंदी करती रही।

आर्थिक कारण

1717 ई. में मुगल सम्राट फर्रुखसियर ने ब्रिटिश कंपनी को अपने शाही फरमान के तहत अनेक प्रकार की छूटें दी थीं। इन छूटों पर अंग्रेज हर कीमत पर अधिक से अधिक अधिकार चाहते थे। साथ ही, मुक्त व्यापार या दस्तकों के कारण तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही थी। क्योंकि अंग्रेज इसका दुरुपयोग करते थे, वे पैसे लेकर इस छूट का इस्तेमाल भारतीय व्यापारियों के संदर्भ में करते थे।

तात्कालिक कारण

प्लासी के युद्ध का तात्कालिक कारण फोर्ट विलियम की किलेबंदी से उत्पन्न तनाव था।

युद्ध का घटनाक्रम

- जब अंग्रेजों द्वारा किलेबंदी का काम जारी रखा गया तब जून 1756 ई. में **सिराजुद्दौला** ने फोर्ट विलियम पर आक्रमण कर उस पर **कब्जा** कर लिया।
- अधिकार के बाद ही **हॉलवेल** (यह अस्थाई रूप से गवर्नर भी बना था) ने एक काल कोठरी घटना की चर्चा की है जो 20 जून 1756 ई. को हुई। जिसे ब्लैकहोल की घटना के नाम से जाना जाता है। इसमें यह बताया गया है कि 146 अंग्रेजों को एक काल कोठरी में बंद कर दिया गया था, अगले दिन सिर्फ 23 अंग्रेज ही बच पाए थे।
- जब फोर्ट विलियम पर सिराजुद्दौला द्वारा कब्जे की खबर मद्रास पहुंची तो **वाटसन (जलसेना)** तथा **क्लाइव (थलसेना)** के नेतृत्व में एक सेना बंगाल पहुँची और उसने **जनवरी, 1757 ई. में फोर्ट विलियम** पर पुनः कब्जा कर लिया।
- **फोर्ट विलियम** पर अधिकार के पश्चात् **अलीनगर की संधि** हुई। इस संधि के तहत अंग्रेजों को **फोर्ट विलियम की किलेबंदी, बिना कर व्यापार, सिक्का ढालने आदि** का अधिकार मिल गया।
- तत्कालीन समय में नवाब के विरुद्ध एक षड्यंत्र चल रहा था जिसमें उसका सेनापति **मीर जाफर**, दीवान **रायदुर्लभ**, **जगत सेठ** (बंगाल का सबसे बड़ा बैंकर), **अमीनचंद** (सबसे बड़ा व्यापारी) तथा कई अन्य लोग शामिल थे।
- ब्रिटिश कंपनी ने इसका फायदा उठाते हुए मीर जाफर से समझौता किया जिसके तहत उसे नवाब बनाने के बदले कंपनी को **24 परगने की जमींदारी** मिलनी थी।

- अतंत: 23 जनू, 1757 ई. को नाटकीय रूप से कुछ घंटों के लिए प्लासी का युद्ध चला, जिसमें मीर जाफर, रायदुर्लभ आदि नवाब की सेना को धोखा देने के लिए शामिल हुए। मीर मदान और मोहन लाल नवाब की ओर से लड़े और मारे गए। नवाब मुर्शिदाबाद भाग गया जहाँ उसकी हत्या कर दी गई। कुल मिलाकर यह नाममात्र का युद्ध था। **वास्तव में यह एक षड्यंत्र था।**

प्लासी युद्ध का प्रभाव

- ***राजनीतिक प्रभाव***- अंग्रेजों को युद्ध में साथ देने के पुरस्कार स्वरूप मीर जाफर नवाब घोषित हुआ। चूंकि नवाब कठपुतली मात्र था, इसलिए बंगाल के साधनों का प्रयोग कर ब्रिटिश सेना ने स्वयं को मजबूत किया। यह विजय ब्रिटिश शासन की स्थापना का प्रारंभिक चरण थी जिसके बाद कंपनी एक व्यापारिक कंपनी न रहकर सैन्य एवं राजनीतिक कंपनी बन गई।
- ***आर्थिक प्रभाव***- इस युद्ध के पश्चात् 24 परगना की जमींदारी ब्रिटिश कंपनी को मिली साथ ही बंगाल की सारी फ्रांसीसी बस्तियां अंग्रेजों को दे दी गईं और कम्पनी को कर मुक्त व्यापार की पुन: अनुमति मिली।

इस युद्ध से कम्पनी को बड़े स्तर पर आर्थिक लाभ (हर्जाना की राशि, अधिकारियों को रिश्वत, पुरस्कार आदि) प्राप्त हुआ और कलकत्ता में कंपनी के टकसाल की स्थापना हुई।

विश्लेषण

वास्तव में इस युद्ध के प्रभाव से धीरे-धीरे ब्रिटिश आर्थिक शोषण की प्रक्रिया व्यापक होती गई। बंगाली **कवि नवीनचंद्र सेन** के अनुसार "प्लासी के युद्ध के बाद भारत के लिए शाश्वत दुखों की काली रात का आरंभ हुआ।"

बक्सर का युद्ध (22 अक्टूबर, 1764 ई.)

बक्सर के युद्ध की पृष्ठभूमि 1757 ई. के प्लासी के युद्ध से तैयार हो चुकी थी, जिसे आगे चलकर विभिन्न घटनाओं ने साकार रूप प्रदान कर दिया। इसके लिए मुख्यत: निम्न राजनीतिक एवं आर्थिक कारण उत्तरदायी थे।

राजनीतिक कारक

मीर जाफर (1757-60 ई.) प्लासी के युद्ध के पश्चात् बंगाल का कठपुतली नवाब बना। वह अपने पूरे शासनकाल में अंग्रेजों की विभिन्न मांगों को पूरा करता रहा। जब वह इसमें सक्षम नहीं हो पाया तो अंग्रेजों ने अधिक लाभ प्राप्ति के उद्देश्य से मीर जाफर के दामाद मीर कासिम से समझौता कर उसे नवाब बना दिया।

मीर कासिम (1760-63 ई.) ने **वर्द्धमान, मिदनापुर** एवं **चटगाँव की दीवानी** अंग्रेजों को दी, परन्तु **मीर कासिम** के समय ही ऐसी कई घटनाएँ हुई जिसके कारण बक्सर के युद्ध का आधार तय हो गया।

- ***सत्ता स्वामित्व का द्वन्द***- मीर जाफर के विपरीत मीर कासिम ने कई शासन सुधार किए। वह अंग्रेजों का कठपुतली मात्र नहीं रहना चाहता था। उसने अंग्रेजों को व्यापारिक अधिकार तो प्रदान किया था पर सत्ता में उन्हें साझेदार नहीं बनाना चाहता था।
- ***राजधानी***- मीर कासिम ने मुर्शिदाबाद में चलने वाले विभिन्न षड्यंत्र एवं अंग्रेजों के हस्तक्षेप से बचने के लिए अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद से मुंगेर बना ली। कासिम के इस कदम से भी तनाव उत्पन्न हुआ।
- ***शाह आलम द्वितीय के सत्ता प्राप्ति के समय का मामला***- आलमगीर द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् शाहआलम द्वितीय बिहार में था। उसने स्वयं को सम्राट घोषित कर दिया। अपने प्रभाव विस्तार के उद्देश्य से अंग्रेजों ने शाहआलम द्वितीय को समर्थन दिया और मीर कासिम से कहा कि वह सम्राट को औपचारिक रूप से स्वीकार करें, परंतु कासिम ने इस बात से इंकार कर दिया क्योंकि उसे डर था कि अंग्रेज सहायता के एवज में सम्राट से बंगाल की सूबेदारी न प्राप्त कर लें।
- ***रामनारायण का मामला***- रामनारायण **बिहार का उप-दीवान** था। जब मीर कासिम ने मतभेद के कारण उसे इस पद से हटा दिया तो वह अंग्रेजों के पास चला गया तब मीर कासिम ने उसे सौंपने की बात अंग्रेजों से कही तो अंग्रेजों ने इस बात को मान लिया।
- ***पटना प्रकरण***- 1763 ई. में एलिस नामक अंग्रेज अधिकारी ने पटना पर आक्रमण कर दिया। मीर कासिम ने उसे पराजित किया तथा साथ ही कई अंग्रेज अधिकारियों को भी बंदी बना लिया। इस घटना से अंग्रेज क्रोधित हो गए और वे मीर कासिम को हटाने का प्रयास करने लगे।

आर्थिक कारण

अंग्रेजों को मिले कर मुक्त व्यापारिक अधिकारों के दुरुपयोग को देखकर मीर कासिम ने 1763 ई. में समस्त आंतरिक व्यापार को सभी के लिए कर मुक्त कर दिया जिससे अंग्रेज नाराज हो गए,

क्योंकि भारतीय तथा ब्रिटिश व्यापारियों की समानता की स्थिति में उन्हें काफी हानि हुई। यह मुद्दा भी मीर कासिम को उसके पद से हटाने का एक कारण बना।

1763 ई. में मीर कासिम को नवाब के पद से हटाकर मीर जाफर को पुनः नवाब का पद दिया गया। अतः मीर कासिम अब पुनः नवाब का पद प्राप्त करने का प्रयास करने लगा। इसके लिए उसने अवध के नवाब जो मुगल सम्राट का वजीर भी था, के साथ धन देकर सैनिक सहायता प्राप्ति की संधि की।

अंततः 22 अक्टूबर, 1764 ई. में बक्सर के मैदान में युद्ध हुआ जिसमें एक तरफ अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो कर रहा था और दूसरी तरफ बंगाल के पूर्व नवाब मीर कासिम, अवध का नवाब शुजाउद्दौला एवं शाहआलम द्वितीय की सम्मिलित सेना थी। युद्ध में सम्मिलित सेना की करारी हार हुई। मीर कासिम भाग गया तथा शाहआलम द्वितीय आदि ने आत्मसमर्पण कर दिया।

बक्सर युद्ध का प्रभाव

राजनीतिक प्रभाव

- इस युद्ध के निर्णय ने प्लासी युद्ध के निर्णय की व्यावहारिक स्तर पर पुष्टि कर दी।
- प्लासी का युद्ध सैन्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नहीं था क्योंकि वह षड्यंत्रों का परिणाम था पर बक्सर युद्ध से अंग्रेजी सेना के युद्ध कौशल का प्रदर्शन हुआ।
- इस युद्ध से अब यह स्पष्ट हो गया कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजों को चुनौती देने वाला कोई नहीं है।

अवध के साथ समझौता

इलाहाबाद की संधि

बक्सर युद्ध में अंग्रेजों की विजय से उन्हें उत्तरी भारत में चुनौती देने वाली कोई शक्ति नहीं थी। इस युद्ध के परिणाम का प्रभाव समस्त भारत पर पड़ा। युद्ध के पश्चात् क्लाइव को भारत में अंग्रेजी प्रदेशों का मुख्य सेनापति तथा गवर्नर बनाकर भेजा गया। क्लाइव का प्रथम कार्य परास्त भारतीय शक्तियों से संबंधों को सुनिश्चित करना था। इस परिप्रेक्ष्य में उसने इलाहाबाद की संधि को मूर्त रूप प्रदान किया।

इलाहाबाद की प्रथम संधि **अगस्त 1765 ई.** में अवध के नवाब **शुजाउदद्‌ौला** और **अंग्रेजों** के बीच हुआ। इस संधि के अनुसार–

- नवाब शुजाउद्‌दौला से इलाहाबाद और कड़ा का क्षेत्र लेकर मुगल बादशाह शाहआलम को दे दिया।
- युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में नवाब द्वारा कंपनी को 50 लाख रुपए दिया गया तथा अवध क्षेत्र में कंपनी को करमुक्त व्यापार की अनुमति देनी पड़ी।
- नवाब द्वारा बनारस के जागीरदार बलवंत सिंह को उनकी जागीर लौटानी पड़ी।

इलाहाबाद की द्वितीय संधि

इलाहाबाद की दूसरी संधि मुगल सम्राट **शाह आलम** और **अंग्रेजों** के बीच हुई संधि से शाहआलम द्वितीय अंग्रेजी संरक्षण में आ गया तथा उसे **इलाहाबाद** तथा **कड़ा** क्षेत्र दिया गया।

- **अंग्रेजों को बंगाल,** बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिली, जिसके बदले में कंपनी को 26 लाख रुपये मुगल बादशाह शाहआलम द्वितीय को देने थे। वस्तुतः इस संधि के बाद मुगल सम्राट की स्थिति रबड़ स्टैम्प जैसी हो गई। अवध के नवाब शुजाउद्दौला के साथ संधि के अनुसार नवाब द्वारा इलाहाबाद तथा कड़ा क्षेत्र मुगल सम्राट शाहआलम को दिया गया।
- अवध को एक **सहायक संधि** भी करनी पड़ी। इस संधि के तहत अवध को अपने खर्चे पर कंपनी की सेना रखनी थी। वास्तव में अवध को बंगाल के लिए एक सुरक्षा कवच (बफर राज्य) के रूप में स्थापित किया गया। अगर अंग्रेज चाहते तो उसे मिलाया जा सकता था, पर मराठा, अहमदशाह अब्दाली आदि के आक्रमणों के भय से एवं अंग्रेजों के लिए उपयुक्त परिस्थितियों के अभाव के कारण अवध को नहीं मिलाया गया।
- बंगाल के नवाब **नज्मुद्दौला** के साथ **द्वैध शासन** के संदर्भ में समझौता हुआ जिसके तहत दीवानी अधिकार (अर्थात् राजस्व वसूली, आर्थिक मामले आदि) अंग्रेजों के पास रहा और निजामत का अधिकार (प्रशासन, न्याय आदि) नवाब को सौंपा गया। वास्तव में यह व्यवस्था शक्ति और उत्तरदायित्व के पृथक्करण की बात करता है जिसमें शक्ति कंपनी के पास थी और उत्तरदायित्व नवाब के पास था।

आर्थिक प्रभाव

द्वैध शासन के कारण भारतीय कृषि क्षेत्र में तेजी से गिरावट आई। परंपरागत शिल्पों का पतन हुआ, व्यापार-वाणिज्य में गिरावट आई तथा धन निकासी की प्रक्रिया तेज हुई। 1770 ई. में बंगाल का अकाल यहां की आर्थिक दुर्दशा का स्पष्ट परिचायक है।

- सिर्फ द्वैध शासन काल (1765-72 ई.) के दौरान जितना धन भारत से बाहर भेजा गया उसके प्रभाव से 18वीं सदी के मध्य में चल रहे औद्योगिक क्रांति को बड़ी मात्रा में पूंजी मिली साथ ही भारत में आगे सैन्य विजयों हेतु आर्थिक मदद भी मिली। यही कारण है कि **के.एम. पणिक्कर** ने इस काल को **'लूट का काल'** कहा है।

बंगाल में द्वैध शासन (1765-72 ई.)

प्लासी एवं बक्सर विजय के पश्चात बंगाल में कंपनी को **दीवानी का अधिकार** प्राप्त हुआ। अब कंपनी व्यापारिक स्वरूप के साथ-साथ **राजनैतिक स्वरूप** से भी युक्त हो गई। अत: **क्लाइव** ने बंगाल में एक नवीन प्रशासनिक संरचना का गठन किया जिसे **द्वैध शासन** के नाम से जाना जाता है।

- वस्तुत: बंगाल में अंग्रेजों ने नवाब का पद तो बनाए रखा, दूसरी तरफ वित्तीय अधिकार दीवान के रूप में स्वयं प्राप्त किया। इस तरह बंगाल का नवाब अभी भी भारतीय था जो शक्ति से रहित था जबकि अंग्रेजों के पास वास्तविक शक्ति थी। इस तरह नवाब के पास उत्तरदायित्व एवं कंपनी के पास शक्ति थी।
- उपरोक्त आधार पर बंगाल में **दो शक्तियों** का शासन मौजूद था, जिसे **द्वैध शासन** कहा जाता है।

उत्तरदायी कारक

कंपनी द्वारा बंगाल का प्रत्यक्ष शासन लेने से भारतीय असंतुष्ट होकर कंपनी के विरुद्ध एकजुट हो सकते थे। अत: **कंपनी के आर्थिक लाभ में बाधा पहुँचती**। इससे बचने के लिए द्वैध शासन लागू किया गया।

- बंगाल का प्रत्यक्ष शासन लेने से कंपनी को अनेकों प्रकार की प्रशाासनिक कठिनाइयों से उलझना पड़ता, चूंकि कंपनी को भारतीय परिवेश एवं प्रशासन की गहन जानकारी नहीं थी इसीलिए उसने प्रशासनिक कठिनाईयों से बचने के लिए द्वैध शासन लागू किया।
- अन्य यूरोपीय जो बंगाल में व्यापार कर रहे थे, वे ब्रिटिश शासन को **'कर'** देने से मना कर सकते थे। इससे एक तरफ कंपनी को राजस्व की हानि होती तो दूसरी तरफ यूरोपीय राजनीति में ब्रिटिश एवं अन्य यूरोपीय देश के बीच बंगाल में टकराव से विवाद भी पैदा हो सकता था। इससे बचने के लिए कंपनी ने द्वैध शासन लागू किया।

दुष्परिणाम

द्वैध शासन से बंगाल में प्रशासनिक अव्यवस्था फैली। वस्तुत: बंगाल के नवाब को कानून व्यवस्था लागू करने और न्याय करने की स्वतंत्रता थी। अत: कानून व्यवस्था की स्थिति कमजोर हुई। फलत: जनता को अत्यधिक कष्ट उठाना पड़ा। इतना ही नहीं, प्रशाासनिक शिथिलता का लाभ उठाकर कंपनी के एजेंट तथा बिचौलियों ने शिल्पकारों का अत्यधिक शोषण किया। वस्तुत: कम्पनी के व्यापारी कम दाम पर शक्ति के बल पर भारतीय शिल्पकारों से वस्तुओं की खरीद करते थे। अत: शिल्पकारों की दशा कमजोर हुई और उन्होंने निर्माण कार्य छोड़ दिया और जीवन यापन के लिए **डाकू** एवं **संन्यासी** बन गए।

द्वैध शासन से आर्थिक क्षेत्र में अव्यवस्था आई। वस्तुत: द्वैध शासन में कर संग्रह की नीलामी होती थी। प्रत्येक वर्ष नीलामी की राशि में अत्याधिक वृद्धि होने से किसानों पर **'कर'** का बोझ बढ़ा। अत: किसान कृषि कार्य छोड़ने लगा। फलत: उत्पादन में कमी आयी साथ ही, **किसानों का निर्धनीकरण** हुआ।

- फलत: अकाल की स्थिति पैदा हुई और इस अकाल के दौरान भी कंपनी का शोषण जारी रहा।

बंगाल से धन की निकासी तीव्र हुई। अत: बंगाल की आर्थिक कमजोरी तो बढ़ी ही साथ ही, कंपनी को भी आर्थिक क्षति उठानी पड़ी क्योंकि कंपनी के व्यापारी एवं कर्मचारी निजी व्यापार पर बल देते थे। अत: उनमें भ्रष्टाचार की प्रवृत्ति बढ़ी।

मैसूर विजय

भारत में मुगल साम्राज्य के पतन के क्रम में कई क्षेत्रीय शक्तियों का उदय हुआ, जिनमें दक्षिण के मराठा एवं निजाम के साथ ही मैसूर भी महत्त्वपूर्ण है। मैसूर के दक्षिण भारतीय शक्ति के रूप में स्थापित होने के पीछे **हैदर अली** एवं **टीपू सुल्तान** की व्यक्तिगत प्रतिभा की निर्णायक भूमिका रही है।

मैसूर के शक्तिशाली होने से न सिर्फ उसका समकालीन

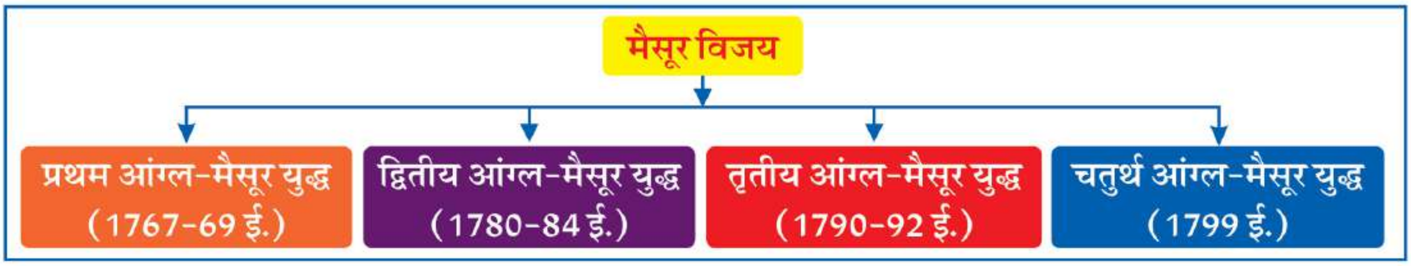

पड़ोसी राज्यों निजाम, मराठा आदि से संघर्ष हुआ वरन् ब्रिटिश कंपनी द्वारा दक्षिण में प्रभुत्त्व स्थापना के क्रम में मैसूर से संघर्ष की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

- 1799 ई. में मैसूर पर प्रभुत्त्व स्थापित करने तक अंग्रेजों को चार युद्ध लड़ने पड़े।
- ये युद्ध सिर्फ **अंग्रेजों** एवं **मैसूर** के लिए ही नहीं वरन् **दक्षिण भारतीय राजनीति** के लिए भी निर्णायक रहे।

प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई.)

इस युद्ध के लिए निम्नलिखित कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही– हैदरअली की महत्त्वकांक्षा एवं विस्तारवादी नीति एवं अंग्रेजों के दक्षिण विस्तार की आर्थिक एवं राजनीतिक आवश्यकताओं के साथ ही मराठा, निजाम आदि दक्षिण भारतीय शक्तियों का मैसूर की बढ़ती शक्ति से चिंतित होना था।

- इस युद्ध के प्रारंभ होने में हैदरअली की विस्तारवादी महत्त्वाकांक्षा की प्रमुख भूमिका रही। साथ ही, वह दक्षिण भारत में अंग्रेजी प्रभाव को खत्म करना चाहता था।
- इस युद्ध में एक तरफ **हैदरअली** तथा दूसरी तरफ **अंग्रेज, मराठा** एवं **निजाम** की सम्मिलित शक्ति थी।
- अंग्रेजों ने 1766 ई. में **निजाम** से संधि की थी जिसमें निजाम ने ब्रिटिश सहायता के बदले उसे **उत्तरी सरकार** देने का वादा किया था।
- 1767 ई. में जब युद्ध प्रारंभ हुआ तो कुछ समय बाद ही यह त्रिगुट टूट गया। हैदरअली ने मराठों को धन तथा निजाम को कुछ देशों का प्रलोभन देकर गुट से अलग कर लिया।

विश्लेषण

इस युद्ध में **हैदरअली** काफी हद तक सफल रहा और एक संदर्भ में वह पहला भारतीय शासक था जिसने प्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों को हराया। **हैदरअली** जब विजय प्राप्त करते हुए मद्रास तक पहुँच गया तब विवश होकर अंग्रेजों ने 1769 ई. में **मद्रास की संधि** की, जिसके प्रमुख प्रावधान निम्न थे;

- दोनों पक्ष एक-दूसरे के विजित क्षेत्रों को लौटा देंगे परन्तु कोई दूसरा पक्ष इन दोनों पर आक्रमण करता है तो वे एक-दूसरे की परस्पर सहायता करेंगे।
- मूलतः यह संधि **हैदर अली** के पक्ष में थी तथा उसने अपनी शर्तों पर यह संधि की थी। इससे अंग्रेजी अजेयता पर भी चोट पहुँची थी। इस युद्ध के परिणामों ने आगे होने वाले युद्धों को भी प्रभावित किया। प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82 ई.) इसका स्पष्ट प्रमाण है।

द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.)

इस युद्ध का तात्कालिक कारण मैसूर राज्य में स्थित माहे बंदरगाह जिसे फ्रेंच संचालित करते थे, पर अंग्रेजों द्वारा आक्रमण कर अधिकार करने का प्रयास करना था।

- बंदरगाह मैसूर राज्य के लिए सैन्य एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था क्योंकि ज्यादातर सैन्य आपूर्ति या आयात-निर्यात की वस्तुएं इसी बंदरगाह से कार्यान्वित होती थीं। अतः विद्यमान परिस्थितियों में युद्ध अवश्यंभावी था।

इस युद्ध में मराठे एवं निजाम हैदर के साथ थे। प्रारंभ में ही हैदर ने **अरकाट** की महत्त्वपूर्ण विजय प्राप्त की। पर कुछ समय बाद अंग्रेजों ने निजाम को गुंटूर क्षेत्र देकर तथा मराठों के साथ **सालबाई (1782 ई.)** की संधि के प्रावधानों के तहत हैदर अली के गुट से अलग कर दिया। इस लड़ाई में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व **आयरकूट** ने किया।

- **पोर्टोनोवा** की लड़ाई में हैदर अली की पराजय हुई तथा वह घायल हो गया और कुछ समय बाद उसकी मृत्यु हो गई।
- हैदर की मृत्यु के पश्चात् युद्ध के दौरान ही 1782 ई. में **टीपू** ने मैसूर की कमान संभाली और संघर्ष को आगे बढ़ाया, पर 1784 ई. के **मंगलौर संधि** से द्वितीय **आंग्ल-मैसूर** युद्ध की समाप्ति हुई। युद्ध **बराबरी** पर समाप्त हुआ तथा दोनों पक्षों ने एक-दूसरे के जीते हुए क्षेत्र लौटा दिये।

तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92 ई.)

इस युद्ध के आरंभ होने के पीछे टीपू की नीतियों की प्रमुख भूमिका रही। टीपू ने यूरोपीय पद्धति पर अपनी एक विकसित सेना गठित की। साथ ही अंग्रेजों के विरुद्ध फ्रांस, तुर्की आदि देशों से वैदेशिक संबंध स्थापित किए।

इस समय फ्रांसीसी क्रांति का दौर था। टीपू ने स्वयं को **जैकोबियन क्लब** से जोड़ा। युद्ध के आरंभ होने का तात्कालिक कारण टीपू द्वारा पश्चिमी तट पर नियंत्रण का प्रयास था, जिसके परिणामस्वरूप पुनः त्रिगुट बना जिसमें अंग्रेज, मराठे एवं निजाम थे। युद्ध में टीपू की हार हुई। इस युद्ध की समाप्ति **1792 ई. की श्रीरंगपट्टनम की संधि** से हुई, जिसके प्रमुख प्रावधानों के अंतर्गत टीपू को अपना आधा राज्य अंग्रेजों को देना पड़ा अर्थात् अंग्रेजों को **डिंडिगुल, बारामहल, मालाबार** क्षेत्र मिला जबकि मराठों को **तुंगभद्रा नदी** का उत्तरी भाग प्राप्त हुआ और हैदराबाद के निजाम को **कृष्णा** एवं **पेन्नार नदी** के बीच का भाग मिला।

इस संधि पर तत्कालीन **गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्नवालिस** ने कहा था कि, **'हमने अपने मित्रों को अधिक मजबूत बनाए बिना ही अपने शत्रुओं को निर्णायक रूप से कमजोर बना दिया।'** इस संधि से ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार तो हुआ ही, साथ ही टीपू का राज्य काफी कमजोर हो गया, जिसकी अंतिम परिणति **1799 ई.** में मैसूर के **पूर्ण पराजय** के रूप में हुई।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.)

1792 ई. में पराजय के पश्चात् से ही टीपू सुल्तान युद्ध में हार एवं अपमान का बदला लेने की कोशिश कर रहा था। इसके लिए पुनः फ्रांस, तुर्की आदि देशों से वैदेशिक संपर्क बढ़ाकर सहयोग प्राप्त करना चाहा।

युद्ध का तात्कालिक प्रमुख कारण था वेलेजली की सहायक संधि की नीति द्वारा साम्राज्य विस्तार। जब वेलेजली ने संधि का प्रस्ताव भेजा तो टीपू ने इसे अस्वीकार कर दिया। परिणामतः वेलेजली ने मैसूर के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

इस युद्ध तक टीपू बहुत कमजोर पड़ गया था फिर भी वह बहादुरी से लड़ा और लड़ते हुए मारा गया।

1799 ई. में मैसूर की राजधानी **श्रीरंगपट्टनम** पर अंग्रेजों का अधिकार हो गया। मैसूर की सत्ता **वाड्यार वंश** के अल्प वयस्क बालक को सौंपकर तथा उसे अंग्रेजी संरक्षण देकर मैसूर पर संधि थोप दी गई। इस संधि के बाद वेलेजली ने कहा था कि- **'पूरब का साम्राज्य अब हमारे कदमों में है।'**

मराठा विजय

मुगल साम्राज्य के कमजोर होने पर भारत में जिन राजनीतिक शक्तियों का उदय हुआ उनमें मराठे सवाधिक महत्त्वपूर्ण थे। मराठा शक्ति के संस्थापक **शिवाजी** से लेकर **पेशवा बालाजी बाजीराव** तक **मराठा साम्राज्यवाद** का लगातार विकास होता गया।

- 1761 ई. में पानीपत के तृतीय युद्ध में अहमद शाह अब्दाली ने मराठों को बुरी तरह पराजित किया परिणामतः मराठे धीरे-धीरे कमजोर पड़ते गए। साथ ही यह भी तय हो गया कि मराठों की केन्द्रीय विकल्प बनने की स्थिति नहीं है।
- इधर अंग्रेज 1757 ई. के प्लासी विजय के पश्चात से निरंतर सफलताएँ प्राप्त कर रहे थे साथ ही, **1759 ई. में बेदरा का युद्ध, 1760 ई. के वांडिवाश का युद्ध** तथा 1763 ई की पेरिस की संधि से अपने समकालीन यूरोपीय व्यापारिक प्रतिद्वन्द्वियों से निपट चुके थे।
- अंग्रेज, मराठों को ही भारत में अपनी सर्वश्रेष्ठता के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा मानते थे। अतः 1764 ई. में **बक्सर विजय** के पश्चात वे इस तलाश में रहने लगे कि जब उचित अवसर मिले तब मराठों पर प्रभाव स्थापित किया जाये।

प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध (1775-82 ई.)

इस युद्ध का मूल कारण मराठों के आपसी झगड़े एवं अंग्रेजों की महत्त्वाकांक्षा थी। 1772 ई. में **माधवराव** की मृत्यु के बाद **नारायण राव पेशवा** बना परन्तु **रघुनाथ राव** द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी।

- **रघुनाथ राव** हर स्थिति में पेशवा पद चाहता था, इस कारण उसने अंग्रेजों से सहायता लेनी चाही। ब्रिटिश कंपनी की कलकत्ता, बंबई, मद्रास आदि में अलग-अलग सरकारें थीं।
- **रघुनाथ राव** ने बंबई सरकार के साथ 1775 ई. में **सूरत की संधि** की। इसके तहत यह तय हुआ कि अंग्रेज, रघुनाथ राव को पेशवा बनाएंगे, बदले में अंग्रेजों को सैन्य खर्च के अतिरिक्त सालसेट एवं बेसिन क्षेत्र प्राप्त होंगे।